सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - राधा

" जय श्री कृष्ण "

Vibrant Pushti

बहुत कठिन है डगर पनघट की

कैसे मैं भर लाऊँ यमुना से मटकी "

हे जीवन!

हे धर्म!

हे भक्ति!

हे ज्ञान!

हे सिद्धि

हे सिद्धांत!

हे मान्यता!

हे श्रद्धा!

हे विश्वास!

हे मन!

हे तन!

हे धन!

हे गुरु!

हे माता पिता!

हे पत्नी!

हे कुटुंब!

हे मित्र!

हे सखी!

हे प्रीत!

हे आत्मा!

हे परमात्मा!

कहीं भी निहालो

कहीं भी संवारो

कहीं भी अध्ययनों

कहीं भी तपस्यो

कहीं भी ध्यानों

कहीं भी भक्तों

कहीं भी जुडो

कहीं भी स्पर्शों

कहीं भी पहुँचो

कहीं भी उपाधों

हाँ! " बहुत कठिन है डगर पनघट की

कैसे मैं भर लाऊँ यमुना से मटकी "

कान्हा! तेरा चरित्र को समझा

कान्हा! तेरे पुरुषार्थ को पूजा

कान्हा! तेरे ज्ञान को सांधा

कान्हा! तेरी लीला में डूबा

कान्हा! तेरी रीत को अपनाया

कान्हा! तेरी प्रीत को संवारा

ओहह!

" बहुत कठिन है डगर पनघट की

कैसे मैं भर लाऊँ यमुना से मटकी "

जन्म जन्म धरे

जीवन जीवन चरे

साँस साँस भरी

घट घट चले

घडी घडी दौडे

ओ कान्हा!

" बहुत कठिन है डगर पनघट की

कैसे मैं भर लाऊँ यमुना से मटकी "

"Vibrant Pushti "

कितने डूबे है हम

कितने खोये है हम

कितने जुडे है हम

सारी साँसों से

सारी द्रष्टि से

सारी प्रकृति से

सारी सृष्टि से

सारी मति से

सारे मन से

सारे तन से

सारे धन से

सारे रोम से

सारे ज्ञान से

सारे भाव से

सारे कर्म से

सारे रंग से

सारे पुरुषार्थ से

सारे बाह्य तरंग से

सारे अंत:करण से

सारे तत्व से

सारे स्पर्श से

सारे अक्षर से

सारे आत्म से

सारे भव से

सारी घडी से

सारी जडी से

सारी जिज्ञासा से

सारी निधि से

सारी नीति से

सारी गति से

सारी दिशा से

सारी रज से

"श्री कृष्ण" से कि

हर कृति तो उनके लिए

हर वृत्ति तो उनके लिए

हर संस्कृति तो उनके लिए

हर पुष्टि तो उनके लिए

हाँ! " कृष्ण " " कृष्ण " " कृष्ण "

हाँ! पूर्व बंगाल में

हाँ! पश्चिम गुजरात में

हाँ! उत्तर कश्मीर में

हाँ! दक्षिण तमिलनाडू में

हर स्थली स्थली पर

हर मानव मानव पर

हर उत्सव उत्सव पर

हर धर्म धर्म पर

हर आनंद आनंद पर

केवल " कृष्ण " " कृष्ण " " कृष्ण "

हाँ! इतनी गहराई से डूबे है

हाँ! इतनी अधिराई से खोये है

हाँ! इतनी प्रीत से जुडे है

हे कृष्ण! हे कृष्ण! हे कृष्ण!

" Vibrant Pushti "

कृष्ण कृष्ण को सोप दिया

तो कृष्ण कृष्ण से आँख मिचौली क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से जोड दिया

तो कृष्ण कृष्ण से अधुरप क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से रंग दिया

तो कृष्ण कृष्ण से द्विरंग क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से वरण किया

तो कृष्ण कृष्ण से छल क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से अंश पाया

तो कृष्ण कृष्ण से रसहीन क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से धर्म संस्थापाया

तो कृष्ण कृष्ण से अधर्म क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से प्रीत जताई

तो कृष्ण कृष्ण से बेवफाई क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से रास रचाई

तो कृष्ण कृष्ण से अवैधता क्यूँ?

हे परब्रह्म! आपने मुझे जो भी जन्म - जीवन - संस्कार - संसार - सृष्टि - प्रकृति और ऋणात्मक संबंध दिये है वह निभाते निभाते पुरुषार्थ अविरत क्षण क्षण करता रहता हूँ, पर कभी कभी ऐसा विचार भी जागता है - यह कैसा जीवन?

पर

साथ साथ ऐसा भी विचार जागता है - हे कृष्ण! तुम्हें भी ऐसा होता ही होगा तो तु कैसे धीरज और संयम रखता है तो मैं भी शांत हो जाता हूँ।

हे कृष्ण! क्या ऐसा ही जीवन है?

हर अंश ऐसे ही!

" Vibrant Pushti "

यह ऐसी रीत है

जिसके अंदर जो खो गया

वह वो हो गया और वो खुद हो गया।

मुझे श्री कृष्ण का ख्याल आया

तो मैं कृष्ण हो गया

तो कृष्ण मैं हो गया

मैं कृष्ण

कृष्ण मैं

मैं मैं खो गया

कृष्ण कृष्ण रह गया

"कृष्ण"

"Vibrant Pushti"

खेलत शृंगार सज के

चुनर ओढ के लचक अदा से

धडकन की ताल को पायल की रिमझिम से

तालियों की ताल को मन की नटखटता से

हिलोरें हिलो भर कर प्रीत की घूमर घूमर अदा से

खिंचे साँवरिया को दौड आये निकट अलबेली अदा से

"Vibrant Pushti"

तेरे नयन का स्पर्श तेरे हाथ का स्पर्श

श्याम से श्यामा हो गई

कैसी यह रीत है?

जो नयन पुकारे और होठ देखे

पलकें जागे और अधर झूके

नयन छूये और होठ बरसे

मयूर पंख के कहीं इशारे

पिया मिलन को जगाये

"Vibrant Pushti"

न छूपा हूँ कहीं न छूपा सकूँगा कहीं

नजर से चुमता हूँ तेरा मुखडा

पलकों से बसाता हूँ तस्वीर तेरी

दूर कहीं भी पहुँचे

निकट में ही रहता हूँ सांस महकाके

"Vibrant Pushti"

तेरे नयन में झांखते झांखते मैं क्या क्या हो गया

तु एक हो गई

मैं एकात्म हो गया

नव विलास नव पद्धति है नित्य नूतन नव रात्रि से सदा नव उल्लास जगाये जीवन में।

जिस तरह उमंग खिलता है यह रात्रि नव यौवन के साथ सदा नव नव खिले तन मन में।

आंतरिक उर्जा जागती है जो जीवन के हर परिस्थिति में साथ रह कर नव नव रस भरेंगे।

नयन नाचत है पायल बाजत है

तन लचकता है मन मचलता है

धडकन धडकती है दिल तडपता है

नव रस भरे पिया पधारते है

नटखट अदा से हमें लूटते है

हम पियाकी पिया हमारे ।

"Vibrant Pushti"

ऐसा खेल खेलना मैं तेरी हो जाऊँ

चांद को चांद देखे टुकुर टुकुर

करे नयनों संग खेल तडपाना

चांद से चांद करे प्रीत इशारा

तु सुंदर जग में सब से निराला

मेरे चांद का मुखडा मुस्कुराया

गगन का चांद धरती पर लहराया

तु ही सुंदर तु ही शीतल

तुम्हें देखने हम गगन में छाया

सदा रहना यह धरती पर

तुज से ही मेरा परिचय पाया

"Vibrant Pushti"

"जितना कष्ट निभावोगे इतने निकट हम आयेंगे।"

"जितना कष्ट दूर करोगे इतना आनंद हम लूटायेंगे।"

ओहहह! श्री प्रभु यह क्या संकेत कर दिया!

आप कितने दयालु हो।

हमें समझना है हम क्या करते है और निभाते है।

"Vibrant Pushti"

निश दिन बरसत नयन हमारे

श्यामा श्याम श्याम श्याम

"सौन्दर्य" सर्वत्र से जिसका आंतरिक ओजस, आंतरिक महक, आंतरिक रुप, आंतरिक भाव, आंतरिक रंग, आंतरिक अदा खिले - जागे - आकर्षित करे - उडे - वर्धन करे।

एसा सौंदर्य!

जो अनोखा है

जो निराला है

जो निरंतर है

जो सदा है

जो प्राकृत है

जो संस्कृत है

ऐसा सौंदर्य सब आत्मीय तत्व में बसता है, जिसे उगाना है, जिसे सिंचन करना है, जिसे योग्य करना है।

कृष्ण काले है तो सौंदर्य है

राधा गोरी है पर बिना कृष्ण सौंदर्यहीन है।

राधा को बार बार काले होना पसंद था।

हम हमारी आतंरिक सौंदर्यता जगाये तो हम भी गोपि हो सकते है।

"Vibrant Pushti"

खेलत श्याम रमत हमसे

हर बार हारत नहीं खेवन जीत

हारत हमसे तो कुछ करत हमसे

हार कर भी बार बार खेलत

रीत निराली निभाते हमसे

खेलत श्याम रमत हमसे

जीत जीत कर थक गये

फिरभी न छूडे साथ हमारा

हाथ पकड खेल ही खेलें

खेलत निरंतर खेल हमसे

खेलत श्याम रमत हमसे

नहीं पता पर उन्हें पता

खेल क्यूँ न छोडे हमसे

क्या आनंद आये खेल से

खेल खेल कर मुस्काये

खेलत श्याम रमत हमसे

"Vibrant Pushti"

कृष्ण ने एक बार राधा से कहा

राधा! आज मेरा शृंगार तु अपने मन, कल्पना, और अपने हाथों से करोगी?

राधा तो ऐसे शब्दों सुन कर मचल उठी, नाच उठी, झुम उठी।

ओहहह! इतना सर्वोत्तम और सर्व श्रेष्ठ सौभाग्य!

राधा सर्वत्र से एक निश्चय करके शृंगार की तैयारी में डूब गयी। कहीं कहीं कल्पना से, कहीं कहीं रीतो से वह अपने आप को योग्य करने में जुड गयी।

कहां से शुरू करु और क्या क्या एक के बाद एक करके अपने प्राण प्रिय को सौंदर्य प्रदान करेगी।

कहीं तरह के फूलों सजाये

कहीं तरह के आभूषण सजाये

कहीं तरह के मोतियों सजाये

कहीं तरह के मालायें गूंथी

कहीं तरह के प्रसाधन मंगवाया

और

अपने तन, मन, धन और हृदय प्रीत भाव रचाये

अब सोचने लगी कहाँ से शुरू करु!

जैसे कान्हा का मुखडा देखती है और तय करती है यहां से शुरू करु!

जैसे कान्हा के मुखडे के पास आती है और शृंगार का निर्णय बदलती है।

एक बार, दो बार, तीन बार, चार बार, बार बार निर्णय बदलने लगी, पर कहीं देर से कुछ कर नहीं पायी।

जब भी कान्हा के मुखडे को देखें और शृंगार हरख देती थी। जैसे कान्हा मूखडा देखती है तो उन्होंने तैयार किया शृंगार अधूरा और सामान्य लगता था।

हर शृंगार में उन्हें कुछ न कुछ कमी महसूस होने लगती।

कान्हा का मुख देख के वह खुद अलग प्रकार का महसूस करती थी। कान्हा के नैन में से उठती किरणें शृंगार रस की हर रीत भूला कर अपने मुखडे पर ऐसे बिखराती थी की कान्हा राधा का शृंगार करता हो और उनका तन मन सहमा सहमा उठता था।

राधा ने द्रडता से अपने आप को संभाला और फिरसे वह अपने निर्णय पर आ गई।

इस बार उन्होंने मधुर फूलों का शृंगार करने को मन बनाया क्यूँकि यह फूलों कान्हा को पसंद थे।

अपने हाथों से फूलों के गुच्छे उठाया और कान्हा की ओर पहूँची और जैसे मुखडे को छूती है और वह सुधबुध खो बैठी, कान्हा ने अपने हाथों से संभाल लिया और राधा को अपने बाहों में सुला दिया।

कहीं देर के बाद राधा की पलकें खुली तो कान्हा के मुखडे को देखते ही वह मुस्कुराई तब कान्हा अति आनंद में झुम उठा और नाचने लगा।

कान्हा को नाचते देख कर वह उठी और वह भी कान्हा को पकडने जाने लगी, जैसे उठते ही उनकी नजर आयने पर पहुंची तो ......

राधा ने अपने दोनों हाथ अपने मुँह पर ढक लिया, और खुद को अति रोमांचित अनुभूत करने लगी। वह नख से अपने जुल्फों तक ऐसी शृंगार रस में डूबी की जो उन्होंने कभी सोचा या संकल्प किया हो, इतनी अदभुत, अलौकिक, सुंदर और वैभवी थी। आज वह अपने प्रियतम से सजायी थी।

ओहहहह!

"Vibrant Pushti"

बूँद ऐसे गीर रही थी

जैसे फूलों से शबनम

हर शबनम से कुछ तरस रहा था

जैसे सावन के लिए धरती

ऐसे तडपती और बिखरती बूंदों से जागी एक तस्वीर

तस्वीर नैनों में ऐसी चमक रही थी जैसे गगन में चांद

चांद से चांदनी बरस रही थी जैसे धडकन से संगीत

संगीत से तरंगें ऐसी तैर रही थी जैसे सागर में नैया

नैया होले होले ऐसे चल रही थी जैसे दिल में प्यार की यादें

यादों से ख्याल ऐसे लहराते थे जैसे प्रियतम का स्पर्श

स्पर्श से प्रीत ऐसी खील रही थी जैसे दिल में कमल

कमल से अधर मिलन ऐसे हो रहे थे जैसे दो तनों में एक आत्मा।

"Vibrant Pushti"

धन्य है यह पले

धन्य है यह मिलना

धन्य है नजर से जुडना

धन्य है रीत

न झुकती पलकें तेरे दर्शन से

न फिरी नजर तेरे रोम रोम छूने से

अपलक नयन बसाने लगे तेरे सलौना सौंदर्य से

पीते रहे प्रीत धारा तेरे बरसते अंगो से

"Vibrant Pushti"

" हे प्रियतम ! न कभी मुझसे बिछड्ना "

नयनों को क्या भाये

रंगो से भरी,

सवर्ण किरणों से सजी,

प्रकृति के रस सिंचित,

अखंड सौभाग्य रचित, आह्लादित सौंदर्य स्वरूप हो।

अधरों को क्या भाये

रस कुंज आनंद स्पंदन से भरे, मधुर प्रीत अमृत से भीगोये,

रोम रोम आत्म रमे लीला रीत, काल काम हराय।

नासिका को क्या भाये

मद भरी नशीली गहरी महक में डूबोय,

अंग अंग सुधबुध खोय,

चंचल चित्त चुराय,

सुगंध तरंग बरसाय।

कर्णो को क्या भाये

नाद अनेरो, स्वर मधुरो, सूर आत्म ज्योत खिंचाय, नाच नचाये तन मन धन को, आकर्षक अंग अंग अंगडाय, हर अदा मतवाली झुमे, दौडे विरहता तीव्र गति से, मिलन को श्वास श्वास बिखराय।

यह एक ऐसी अनुभूति स्पर्श करा रहा हूँ,

जो सेवा मिलन से होती है,

केवल "श्री कृष्ण" चरित्र को मन, चित्त, तन और श्वास श्वास में बसा कर आत्मा को स्पर्श कराता हूँ।

आनंद लूटता हूँ और आनंद लूटा रहा हूँ।

मन को क्या भाये

तन को क्या भाये

धडकन को क्या भाये

दिल को क्या भाये

यही मेरा स्पंदन है।

"Vibrant Pushti"

" हे पिया ! तुम बिन मोरा लागे न जिया "

झुमते हुए दिल से

जागा आनंद

जैसे तुने छूये व्रज रज

हमने छूये मधुर स्वर

लूट गये

जुड गये

आत्म की प्रीत में

न हम रहे

हम हो गये व्रज रज के स्पर्श के

हम हो गये व्रज रज के सांस के

हम हो गये व्रज रज के नयन के

"व्रजरज" को छूना

"व्रजरज" को अंग अंग बसाना

"व्रजरज" को तन मन धन में सिंचना

"व्रजरज" को पहचानना

"व्रजरज" में खेलना

"व्रजरज" में डूबना

"व्रजरज" में खो जाना

"व्रजरज" में लूट जाना

ओहहह! क्या क्या हो रहा है

खिंचती जा रहा है आंतरिक आनंद की उमंगें

हो रहे है दिवाने व्रज के जो खुद को मिटाने जा रहे है

तुम मिलो साँवरिया या तुम्हारी व्रजरज मिले

हमने तो तुम पर वारी सारी उमरिया

तु ही तु मेरा रचैया तु जैसे चलाये चाले जीवन नैया

न खिसकना यह नैनन से

न दूर जाना यह धडकन से

न तोड जाना यह प्रीत भरी सांसों को

साथ निभाना मेरा,

आत्म से परम आत्म एक करने को

"Vibrant Pushti"

बिन देखे छिन जात कलप-भरि,

बिरहा-अनल दही री।

बिन दरसन अंग अंग तडप-भरि,

नैनन-नदी बही री।

प्रीत-केलि घनश्याम सांस-भरि,

आत्म-ज्योत गही री।

चैन नहीं पलछिन बिछड याद-भरि, अद्‌वैत जन्म नही री।

श्यामा-श्याम की रीत प्रीत-भरि,

सागर-नदी संग भयी री।

"Vibrant Pushti"

जैसे सूर्य सर्वे तत्वों को खिंचे

जैसे धरती सर्वे तत्वों को सिंचे

जैसे प्रकृति सर्वे तत्वों का परिवर्तन करे

ऐसे हम भी कहीं तत्वों की रचना है

हमारा मूल तत्व परम परमात्मा है, जो मूल रूप है।

मूल तत्व, मूल रूप का दर्शन करने से हममें मूल संस्करण याद आये

हममें जगत परिवर्तन से हुई कहीं प्रकार की आंतरिक और बाहय असर से जो हम विचलित और दूर हुए है उनमें निकटता के संस्कार प्रस्थापित करने।

हमारी धारणा को द्रड करने।

हममें हमारी योग्यता समझने।

खुद की पहचान जगाने।

श्री परम प्रिये मेरा दंडवत प्रणाम!

बसो मेरे नयन से मेरे आत्म में।

बसो मेरे कर्ण से मेरे चितवन में।

बसो मेरे तन में आपकी स्थली की रज रज से

बसो मेरे सांसो में आपकी महकती निकट उच्छ्वास से

बसो मेरे आंतर बाहय जीवन में आपके शृंगार सृजन से

मेरे प्रिये!

"Vibrant Pushti"

हम नहीं जाते अपने गाँव

मिट्टी पुकारे खेत पुकारे

यमुना जल की लहर पुकारे

हम नहीं जाते अपने गाँव

ऊंचे ऊंचे गिरिराज शिखर पुकारे

कुंजन कुंजन गलियाँ पुकारे

खेलत हम नीत नीत प्यार

हम नहीं जाते अपने गाँव

कदंब डाली झुलन पुकारे

गोपी आंचल वटवृक्ष पुकारे

मटक मटक कि दूध धार

हम नहीं जाते अपने गाँव

रज रज आंतर मन पुकारे

डग डग माखन चोर्य पुकारे

गोकुल नचाया बार बार

हम नहीं जाते अपने गाँव

मेरे मन में आश जगायी

तन धन में विरह प्यास जगायी

आत्म पल पल करे पुकार

एक बार आजा मेरे द्वार

साँवरिया कन्हैया नटखैया

"Vibrant Pushti"

" हे व्रज धाम "

ओहहह! बंसरी चुराके राधा भागी, ऐसी भागी ऐसी भागी न राधा दिखे न बंसरी। दूर दूर कहीं दूर निकल पडी राधा बंसरी को छुपाने।

कितनी गहरी और वनस्पति भरी झाडीओं में वह खुद छुप गयी साथ साथ बंसरी भी।

न कोई देख सके न कोई पहचान सके।

दोनों मौन न कोई पंखी की चहल पहल न कोई पशु की आना जानी।

इतने में बंसरी के सूर छूटे,

राधा! आज कैसी यह घडीयाँ है कि तुम और मैं अकेले, अबतक हम सदा तीन साथ साथ होते थे पर पहली बार तुम और मैं दोनों साथ और वह भी अकेले।

ओहहह! कैसा है यह संयोग!

राधा! मैं तो सदा कान्हा के अधर पर या कान्हा के उंगलियों में ही रहती हूँ पर आज अनायास तेरे उंगलियों में हूँ।

राधा इधर उधर देख कर बोली

बंसरी शोर न मचा कहीं कान्हा हमें ढूँढते ढूँढते यहां आजाये और यह शोर से हमें देख न ले।

बंसरी ने कहा - राधा! क्यूँ तुने मुझे चुराकर कान्हा से दूर जाकर छुप गयी?

राधा ने कहा बंसरी सच कहूं जब तु गाती है तब मैं सुधबुध खो देती हूँ और तेरे सूर के गूंज के पीछे पीछे भाग कर अपने प्रियतम के शरण में पहूँच जाती हूँ। क्या है ऐसा तुममें जो हम दौडी दौडी चले आते है और हममें ऐसा क्या नहीं जो उनके विरह में आँसू बहाये या यादों में तडपे तो भी वह नहीं आते?

ओहह! क्या जोड दिया!

जागा है ऐसा की धडकन पुकारती रहती है।

हे राधा! कहाँ छुपी है?

बंसरी समझ गयी राधा ने मुझे क्यूँ चुराया है? वह शांत हो कर राधा के आंतर स्पर्श से राधा की प्रीत रीत समझने लगी।

ओहहहह! यह क्या?

यह कैसी अगन है?

यह कैसी तडपन है?

यह कैसा आत्मीय गंठन है?

यह कैसा विरह है?

यह कैसी प्रीत है?

यह कैसी रीति है?

यह कैसी अमृत धारा है?

हाँ! अब सिर्फ तुम्हारे लिए ही है

कहता हूँ!

बंसरी के अंग अंग में

बंसरी के मन तरंग में

बंसरी के आत्म रंग में

बंसरी के सूर संगम में

राधा की प्रीत सिंचन होने लगी

बंसरी को एहसास होने लगा की राधा क्या है? क्यूँ है?

बंसरी एक ही अदा में बिना पलक झबके और बिना खिसके स्थिर हो गयी। राधा को निहारते निहाळते अपने नयनों से एक नजर से मुखडे को देखा तो......

ओहहहह! यह क्या?

राधा की जुल्फें उलझे हुए थे, कपोल पर प्रस्वेद बिंदु थे, नयनों में कोई पुकार थी, होठों थरथरा रहे थे, मुखडा कोई वेदना से तडप रहा था। कोई ऐसा चित्कार अपने रोम रोम से जगा रही थी जो उनके श्वास में था वही उनके उच्छ्वास में था - कान्हा!

नहीं! यह तो सिर्फ तुम्हारी है।

यही चित्कार छू कर बंसरी से सहा न गया और रहा न गया, उन्होंने खुद को संभाल कर और जगा कर अपने प्रीत विरह के सूर छेड दिया।

सूर की सूरावली ऐसी गूँजी की चारों ओर चित्कार जाग उठा, पंखी गाने लगे, पशु दहाडने लगे, वनस्पति हिलने लगे, नदी सघोष करने लगी, धरती थरथरने लगी, वायु उष्मा भरने लगा,

हर तरफ से एक ही सूर

कान्हा! कान्हा! कान्हा!

कान्हा! कान्हा! की पुकार सुन कर कान्हा अपनी विरह पुकार को तेज कर दिया।

न तो साथ बंसरी थी और न साथ दिल की धडकन में बसी प्रियतमा राधा थी। न तन में चैन था - न तन में उमंग था। न नयनों में द्रष्टि थी न होठों पर प्यास थी, न मुखडे पर रंग था न श्वासों में प्राण थे, हाथ ऐसे पसारेते थे जैसे गगन में शून्य, कदम ऐसे लडखडाते थे जैसे आसमान के बादल, जो कभी इधर टकराते थे कभी उधर आहे भरते थे। रोम रोम से एक ही आग भडक रही थी - राधा! राधा! राधा!

ओहहह! राधा! कान्हा!

कान्हा! राधा! की गूँज ने पूरे ब्रह्मांड को यही सूर में एक कर दिया।

जैसे बंसरी ने राधा सुना - ओहहह! खुद उठ कर राधा के अधर को छू कर राधा को सूर छेडने का संकेत कर दिया!

राधाजी के अधरों का स्पर्श पाकर बंसरी में अलौकिक प्रीत सरगम बस गयी वह अपने आप को भूल कर राधाजी में खो गई। राधाजी के मधुर अधरों का रस पान पाते ही वह ऐसी गा उठी की कान्हा की धडकन के पास पहुँच गई और कान्हा को आकुल व्याकुल कर दिया, जैसे जब कान्हा बजाता था बांसुरी तब राधा का हाल होता था ऐसा आज कान्हा का हो गया।

कान्हा मुग्ध हो कर दौडा सूरो के पथ पर, जैसे नयनों ने पीले रंग की ओढनी देखी कान्हा सुधबुध खोने लगे, नयनों के विरह बादल बरसने लगे, मन के आंतर भाव पुकारने लगे, तन के रोम रोम आहे भरने लगे, कदमों के ताल तुटक तुटक कर राधा को समर्पित होने के लिए झुझुमने लगे।

राधा के नयनों ने जैसै कान्हा को देखा वह उछल पडी और दौडी अपने प्रियतम को मिलने। दोनों ओर विरह की आग और इनमें बंसरी का राधाजी का सानिध्य! दोनों आत्मा का विरहाग्नी धीरे धीरे एक होने लगा, प्रीत की उष्मा दोनों को एकात्म करने लगी, राधा कान्हा हो गई - कान्हा राधा हो गये।

राधा कान्हा परमात्मा हो गये।

हम भी अपने विरह में एक हो गये।

"Vibrant Pushti"
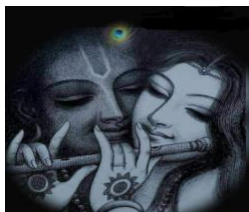
"नींद न आये सारी सारी रात

करता रहता हूँ पल पल याद"

क्यूँ याद करते हो?

याद करते हो तो हम जो कहते है, समझाते है वह करते क्यूँ नहीं हो?

यह संसार के दल दल में फसते क्यूँ हो? हर एक पल यहाँ भ्रमणा है तो भंवर में खूपते क्यूँ हो?

बार बार विचार बदलते रहते हो

बार बार कर्म की रीत बदलते रहते हो

तो कौन संवारेगा?

तो कौन सुधरेगा?

जगत की हर परिस्थिति में से केवल जो योग्य है वह पहचानते जाव और यही योग्यता से जीवन घडते जाव तो एक दिन योग्य समझ आ जायेगी और धीरे धीरे खुद को पहचान जाओगे और खुद की प्रकृति पहचान जाओगे, बस यही पल से मुझे भी जान जाओगे।

यह

"नींद नहीं आती सारी सारी रात

खोया रहता हूँ तेरी ही याद में"

यह आनंद तुम्हें अति भूतित करेगा यह ऐसे नहीं होता है।

इसके लिए खुद को यह जगत के योग संयोग और संजोग से जागृत होना है।

यह असाधारणता को अपने में जागृत करना, यह जागृतता हमें जीवन की हर पल से शिखना मिलता है।

"Vibrant Pushti"

"राधा"

"राधाष्टमी" समझते है "राधा"

एक नंदगाव का छोरा और एक बरसाना की छोरी

जिन्होंने कर दिया पुरे ब्रह्मांड को अपनी प्रीत भूमि

कैसी थी यह नवल किशोरी कैसा था नवल किशोर

बंसरी की तान पर पायल की धून पर प्रीत जीवन जगाया

प्रीत की पुकार पर प्रीत की शरणागत पर हर तत्व परिवर्तन किया

ब्रह्मांड के हर सिद्धांत को संपूर्ण लीला में परिमाण कर दिया

कैसे आत्मा थे जो आत्मा को परमात्मा कर दिया

श्वास श्वास में राधा बसे याद याद में कान्हा हम भी हो जाये प्रीत पुजारी जो जन्म जन्म नहीं भटके

एक पल के लिये हम राधा हो जाये तो वह एक जन्म के लिये कृष्ण

कैसी है यह रीत प्रीत की जो हममें आये रसियो

राधा रानी की प्रीत निराली जो प्रिय प्रियतम चरण बसियों

"Vibrant Pushti"

"राधा"   राधा - केवल राधा

"राधे"   राधे - राधा + कृष्ण

"राधिका" राधा + कृष्ण + राधा की सखियां

हर बार याद करते है, बार बार पुकारते है।

कौन किसको, कैसे और किसके साथ याद करते है, पुकारते है।

सर्वे के साथ राधा है, सर्वे के अंदर राधा है।

राधा - रज रज में याद

रज रज में स्मृति

रज रज में पुकार

रज रज में आंतरिकता

रज रज में दर्शन

रज रज में स्पर्श

रज रज में विरह

रज रज में अभिन्न

रज रज में लीला

रज रज में प्रीति

रज रज में प्रियतम

न भिन्न न अस्थिर न अविद्या न अधूरप

"Vibrant Pushti"
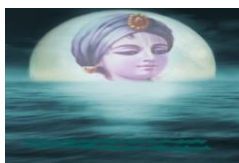
न तुलना होती है प्रीत की

जो हर पल सर्वोच्च होय

न कभी छूटती प्रीत प्रियतम की

जो प्रिये कहीं भी होय।

प्रीत रीत ही ऐसी

हम बार बार प्यार मांगे तो वो प्यार नहीं है।

जो हममें बसे है दिल में उनसे ही जुडना हमारा प्यार है।

"Vibrant Pushti"

नूतन वर्ष दिन आये नित नए साल

साथ साथ कुछ लाये नित नए संकल्प

जब आये यह दिन तब याद आये वह दिन

बरसाती थी कहीं अठखेलियाँ कृष्ण कृष्णा कहे वह दिन

हर पल पुकारते है हर एक के मन में, कृष्णा कृष्णा मिले तब चैन

दूर भी रहे या पास भी आये, तो भी सदा स्मरण में रहे दिल हमारा

नूतन वर्ष दिन आया आज तुम्हारा, खिल खिल जाये घर हमारा

आज खेलेंगे उत्सव ऐसा हर तरफ बजेगी धून कृष्णा

छम छम पायलिया बजेगी झुमेंगे नाचेंगे नटखट अदा से

हे कृष्णा! कृष्णा कृष्णा पुकारेंगे हर पल, आना आज हमारे घर पर।

"Vibrant Pushti"

मो नैननि की ठौर कौ, कब लैहै वह रुंध।

तीन ताप शीतल करन, सघन तरुन को धुंध।।

कब वृंदावन धरनि में, चरन परैंगे जाय।

लौटि धूरि धरि शीश पर, कछु मुख हू में पाय।।

क्या कहे!

मो नैननि की ठौर कौ,

मेरे नयन के नैन याने आंतर चक्षु,

मेरे नयन के नैन याने मेरे नयन की दृष्टि - तेज,

मेरे नयन के नैन याने मेरे नयन के अंदर जो भी हो - तेज, हर्ष बूँद, विरह अग्नि, इंतजार, आशा, तस्वीर, एकरार, संकेत, अठखेलियाँ, नजर, स्थिरता, नजाकत, याचना, दया, न्योछावर, झुकना, खोलना, बंद करना, दौडाना, दूर तक तकना, अपनाना, जगाना, धोना, दोरना, सजाना, डूबाना, बसाना, छोडना, इबादत करना, आरती उतारना, गाना, रचना।

कितने अनगिनत!

मेरे नैननि की ठौर कौ

मेरे नयन के नैन की ठौर कौ याने स्थिरता, शांतता, शुद्धता, सरलता को

कब लैहै वह रुंध

कब लैहै याने कब लेंगे वह रुंध याने कब लेंगे वह खबर

वह याने जो मेरे नयन में बसे है,

वह याने जो मेरे नयन से मेरे रोम रोम में बसे है

वह याने जो मेरे नयन से मेरे रोम रोम से मेरे दिल में बसे है

वह याने जो मेरे नयन से मेरे रोम रोम से मेरे दिल से मेरे आत्म में बसे है।

तीन ताप शीतल करन

तीन ताप याने आधि भौतिक, आधि दैविक, आधि आध्यात्मिक ताप को शीतल करे।

सघन तरुन को धुंध

सघन तरुन याने सर्वे - सघळा तारुण्य - जिसमें हम सर्वथा से चंचल होते है, वह चंचलता हमें दूर रखे या चंचलता को रोक दे या चंचलता को शांत करदे शीतल करदे।

कब वृंदावन धरनि में, चरन परैंगे जाय।

लौटि धरि शीश पर, कछु मुख हूं में पाय।।

तब वृंदावन की धरनि में, चरन परैंगे जाय

याने

ऐसे नयन, ऐसी शीतलता से वृंदावन की धरती को अपने चरन छूये तो

लौटि धरि शीश पर याने श्री यमुना पान धराय शीश पर

और

कछु मुख हूं में पाय

याने

मुख से भी कुछ छू कर आंतर शुद्धि पमाय

रोम रोम पवित्र कराय

भव सागर पार उतराय

जीवन सफल हो जाय।

यह है वृंदावन

"वृंदावन"

"Vibrant Pushti"

"लता पत्ते फूल लिपटे एक रस निकुंज

प्रिय प्रियतम रीत विरह वृंदावन रज"

"निरखत नजर अपलक नयन तरसत बूँद

निकट अटक सांस प्रीत गूंजन ढूँढे"

वृंदावन की हर लता, हर पत्ते, हर फूल उनसे रची निकुंज एक दूजेसे ऐसे लिपटे है जैसे प्रिय और प्रियतम,

प्रीत के विरह रस से उनका सिंचन हुआ है, रस मेरे निरखते नयन से उठती अपलक नजर,

मुझे भी मेरे प्रियतम के लिए तरसती है,

निकट आते आते मेरी सांस को बार बार अटका के प्रीत के स्वर गूंजन को ढूँढती है

यादों में रहते हो दूर भी रहते हो

पता नहीं क्यूँ

धडकन हर पल निकट रखती है

बासुरी की जो रीत कहीं है

हम कितने जलते है

हम कितने उदास हो जाते है

हमारी वेदना

हमारी तडपन

हमारी तीव्रता

बंसरी के सुर बहने लगे, कर्ण को छूते ही अंतर मन में तीव्रता जागने लगी और धडकन भी उनसे एक सुर होने लगी। मंद मंद वायु से बहते सुर ने संकेत कर दिया की प्रियतम इंतजार कर रहे है, उनके सुर में विरह पुकार केवल मेरा ही नाम पुकारता है, नाम के साथ साथ कुछ कहे रहा है।

आकाश के बादल वही सुर की ओर दौड रहे थे, पंछी अपनी उडान को वही सुर से खुद की गति को तेज करके सुर में खोने दौड रहे थे, गौवां रंभा रंभा करके वही सुर तरफ दौड रही थी।

एक ही दिशा में दौडते हर प्रेमी ने सारे सृष्टि को संकेत दिया कि प्रियतम पुकार रहे है।

आंतर पुकार सुनकर प्रिया भी आकुल व्याकुल हो कर वही दिशा में दौडने लगी। अर्ध सजे शृंगार अपनी परम प्रिय सखी दौडते देख कर सब सखियाँ भी वही गति से दौडने लगी।

जैसे सुर से नजदीकी बढने लगी कहीं के सुधबुध खोने लगी, वह बेशुद्ध होकर धरती पर गिरने लगे। अपनी प्रिय सखी का नहीं कोई आधार से सखियाँ बैचेनी अनुभव करने लगी, इतने में मधुर महक ने उन्हें सजीव सिंचन पिलाते ही वह सब सखियाँ तीव्रता से वही सुर की ओर अति तीव्रता से दौडते दौडते नयन में प्रिये सखी को भी ढूँढने लगी।

जैसे मधुर सुर के निकट पहुंचते ही वह सब सखियाँ पागल सी हो गई, खुद को भूल कर अपनी प्रिय सखी को खुद ही प्रिय सखी समझने लगी, और वह बंसरी धून पुकारने वाले पास आकर उनके चरणों में तडपने लगी।

इतने में अपने कर्ण पर "हे श्याम!" सुर सुनकर वह अति वेग से जागृत हो गई और वही सुर की तरफ दौडी और देखा अपनी प्रिय सखी यमुना निकुंज रेत में आनंद विभोर होकर मूग्ध अवस्था में है। सखियाँ समझ गयी परम प्रियतम आसपास ही होंगे, नयन फिराते ही एक पैड के निचे वह मोहक अदा में खडे थे।

सब सखियाँ समझ गयी की अपनी परम प्रिये सखि और उनका प्रियतम आनंद की कहीं अठखेलियाँ खेल चुके है। दोनों अति सुंदर और मोहक अदा से एक दूसरे में खो गये थे।

घनी अंधेरी रात थी, न कोई आवाज न कोई चहल पहल, चारों ओर सन्नाटा था। पत्तों मौन थे, वनस्पतियां अपनी समाधि में थी। फूलों अपनी महेक से सृष्टि को संकेत कर रहे थे विराम करने का। ऐसी नीरव शांति में नदी अपनी धारा से अपनी संगीतमय लहरों से सबका सिंचन कर रही थी और कहती थी - हम जागृत है सबकी सलामती के लिए।

इतने में कहीं खनखन के सूर जागे, धीरे धीरे वह सूर नीरवता का भंग करके आगे बढ रहा था। बढते सूर किसीके कदम की आहट और पायल की पहचान करा रहे थे।

ओहहह! इतना अंधकार और निर्जनता में यह खनखन क्यूँ? समय भी सावध हो कर वह सूर के पीछे पीछे चलने लगा। इतने में आवाज रणकी - अरे! यहाँ तो थी कहाँ भूल गयी?

सिस्कार सिस्कार गूंजने लगी, पत्ते हिलने लगे, वनस्पतियां जागने लगी और नदी दौडने लगी। इतने में फिर वही शब्द गूंजे - कहाँ रखी थी, कहाँ भूल गयी, क्यूँ तडपाती है? मन का शोर जोर जोर से पुकारने लगे - कैसी है यह बावरी जो मुझे सता रही है, मै भी कितनी पागल हूँ की मैं अपनी तरवराट में भूल गई।

ढूँढते ढूँढते कहीं समय बित गया पर वह न मिली और मैं सहमी सहमी हो गई, नैनों से बरसात बरसने लगा, होठों से अमृत सुकने लगे, सांसों से अगन बहने लगी और तन मन सुधबुध खोने लगे पर वह न मिली - न मिली - न मिली।

मुझे पूछने पर क्या उत्तर करुंगी? कितने चावसे मैंने मांगा था और कहा था कल अवश्य वापस करुंगी। पर यह क्या हो गया? कितनी सताती है मुझे? क्या करु! क्या होगा? यही सोच में बेशुद्ध हो कर मैं गीर गयी जमीन पर और प्रकृति ने संभाल लिया।

मंद मंद वायु ने मुझे सबकुछ भूलाकर अपनी सानिध्य का सहारा दे कर मुझे धरती माँ की गोद में सुला दिया। पलकें झुकी झुकी में बीड गई।

छोटा सा प्रहर बिता ही था और मधूर से सूर ने सारी सृष्टि को आनंद की लहर में मुग्ध कर दिया। पत्ते झुमने लगे, फूल महकने लगे, नदी गाने लगी और वायु सरगम बजाने लगा। चारों ओर मधूर ही मधूर धून बजने लगी, नीरवता में प्राण प्रकट होने लगे। यही थनगनाट से पायल थनकी!

पायल की थनगन से थोडा जो होश आया वह खुली हुई पलकों से और जागते हुए कर्णो ने मधुर से सूर सुने, यही सूर सुनते सुनते मेरा मन और तन वह सूर की तरफ खींचने लगा और मैं खडी हो गई, बहते सूर मुझे कहने लगे - पगली! तु कहा ढूँढ रही थी मुझे मैं तो यहाँ हूँ।

हाँ हाँ! मुझे सब याद आ गया मैं आकुल व्याकुल हो गई और दौडी वह सूर की ओर, क्यूँकि यही तो मुझे देनी थी मेरे प्रियतम को जिन्होंने मुझे अपने कर कमलों से रखने दी थी, पर मैं बावरी यहाँ भूल गई थी।

दौडी दौडी और जहां से सूर प्रकट हो रहे थे वहां पहूंच कर देखा तो - ओहहह! नटखट श्याम! अपनी बांकी अदा में सूर रेलाते थे।

मैं पागल सी हो गई और दौड के उनके चरणों में!

नयनों से विरहता बहती थी और उनसे यह भूल की माफी मांग रही थी। कान्हा ने उठाया और प्यार से हाथ पकड कर कहा - राधे!

मैं पूरी तरह से उन पर लूटक गई, अपनी बाहों से मुझे संभाला और पुचकारते पुचकारते कहने लगा - राधे! मेरे प्रियतम!

इतनी रात को यह मेरी बांसुरी के लिए!

कितना मेरा ख्याल!

मैं तो सिसक गई, थरथराने लगी, न कोई अक्षर और न कोई नयन किरण में कोई जान!

मेरी गलती पर भी वह सिर्फ मेरी सकारात्मकता!

मेरी खुद की बनायी परिस्थिति में भी मेरी महानता!

मेरी तकलीफ में भी उन्हें इतनी असर होते हुए खुद की तकलीफ समझ कर मुझे सहारा!

हर पल में मेरा ख्याल!

इतनी रात को वह यहाँ तक पहुँच कर मुझे संभालते संभालते मुझे कितनी सांत्वना!

हे कान्हा! हे कान्हा!

राधे! मेरा प्यार!

क्या कहूँ मेरे प्रभु!

मिलता कोई मौका तेरा दर्श पाने का

पर क्या रिहायशी है यह संसार की

जो तुझे मिलने की उम्मीदों को भी सरे आम लूटती है।

क्या करें क्यूँ बार बार तेरी फितरत को भी गुनाह लगता है।

"Vibrant Pushti"

हर रास्ते पर एक निशान होते है

हर नदी पर एक ओवारा होता है

हर नजर पर एक तस्वीर होती है

हर दिल पर एक ही मोहब्बत होती है

कहीं तस्वीर देखी

पर तेरी यादों के मुकाबिल नहीं देखी

किसीका भी मुखडा दिखादो

पर मेरे प्यार के मुकाबले कोई नहीं

"Vibrant Pushti"

क्या पहचानना है प्रीत लीला की झलक!

राधा श्याम और श्याम राधा का सुक्ष्म स्पर्श!

एक बार दोनों अपने नयनों से एक दूसरे को निहारते निहारते यमुनाजी पुलिन जा पहूँचे।

यमुनाजी ने देखा - ओहह! मेरे प्रियतम पधार रहे है युगल स्वरुप में! आज दर्शन के साथ स्पर्श करेंगे, धीरे धीरे अपना प्रीत उमंग भरने लगी और भरते भरते श्री युगल निकुंज की तरफ बहाने लगी। श्री प्रभु ने तिरछी नजर से देखा और मुस्कुराने लगे, राधाजी अचंबित हो कर सहमे लगी तब श्री प्रभु मुस्कुराते कहने लगे - प्रिये! यह यमुना हमारे दर्शन और चरण स्पर्श की आज्ञा मांग रही है।

राधाजी ने कहा - वह ऐसा क्यूँ करे? उन्हें हमारी प्रीत नजर नहीं आती है?

श्री प्रभु अटहास्य करने लगे और राधाजी को अपने बाहुबल से जकडने लगे, अधर अमृत पान करने लगे। इतने में यमुना ने श्री प्रभु चरण स्पर्श का आनंद पा कर खुद को समेटने लगी।

राधाजी ने देखा केवल प्रियतम के चरण छूये और हस्ते मुस्कुराते खुद को सिमट रही थी, तब राधाजी ने कहा - प्रिये! ऐसा क्यूँ हुआ यमुना तुम्हारे चरण स्पर्श करके सिमट रही है और मेरे चरण स्पर्श न पाया और हस्ते मुस्कुराते जा रही है?

श्री प्रभु ने मुस्कुराते कहा - राधे! यमुना ने ऐसा इसलिए किया है की - तुम्हारे अति कोमल चरण कहीं उनकी तरंग से चोट ना पहुंचाये! कितना अलौकिक ख्याल।

राधाजी लज्जित हो गये और मन ही मन उन्हें धन्यवाद करने लगी।

कितना मासूम और समर्पित ख्याल!

प्रीत की कितनी उंची गहराई!

"Vibrant Pushti"

क्या कहे उनकी प्रीत अदा को

हर सांस नटखट करता जाय

धडकन से सदा निकले स्वर

मेरा प्रियतम प्यार!

एक बार सब सखियाँ ने योजना घडी, श्याम सुंदर घर जाये और नटखट को घुमा घुमा कर राधा से दूर रखा जाय।

लटक मटक कर नाचती कूदती बिना कोई अणसार सब पहूँची कृष्ण कन्हैया भवन, देखा तो

ओहहह! नंद कुमार श्याम सज धज कर कहीं बाहर जाने की तैयारी कर रहे थे और हमने पकड लिया। हमें देखते ही वह कहने लगा अच्छा किया तुम सब आ गयी, मैं सोच ही रहा था कि मैं मैया के काम से बाहर जा रहा हूँ तो यहां यह भुवन की रखवाली कौन करेगा और काम हो जाने के बाद मैया छुट्टी कैसे पाऊंगा? तुम सब मेरे कमरे में बैठो हम अभी काम निपटाके तुरंत आते है बाद में साथ निकलते है। सब सखियाँ ने हा भर कर कमरे में बैठ गयी और कान्हा चला गया।

कितनी देर भयी न कान्हा आया न कोई संदेश!

एक सखी धीरे से उठ कर यशोदा मैया के पास पहुँची और कहने लगी - कहा भेजा है श्याम साँवरे को जो अभी तक यहा आया नही है?

यशोदाजी ने कहा कौनसा काम और कौन नही आया?

सखी बोली - मैया नटखट गोपाल! जो तुमने कबसे भेजा है।

यशोदाजी ने कहा - अरी! हम क्यूँ भेजे मेरे बाल कृष्ण को जो हर पल आनंद करता जाय। वह तो सदा खेल खेले और हम सबको उलझा जाय, ऐसी रीत से तो हम पागल है उनके।

ओहहहह! सब सखियाँ अचंबित! कोई शरारत खेली है नटवर नागर ने जो हम उनसे खेलने आये थे।

सब दौडी राधा भुवन जो खुद न पकडा जाय। पर यहां तो न परम सखि राधा और न गोविंद गोपाला।

अब कहां कहां ढूँढा जाय? दौडी वह यमुना किनारे, दौडी वह गहर वन गली पर नही विरह मिटता जाय।

न पाये परम प्रिय सखी और नटखट नंद किशोर। ढूँढते ढूँढते सब सखियाँ एक दूसरे को कहने लगी - तुने ऐसा किया इसलिए ऐसा हुआ, ऐसी चडभड में सब के नयनों से विरह अश्रु बहने लगे और तडपने लगे, तडपते तडपते वह अपने आप को खोने लगे।

इतने में एक सूर उनके कर्ण पटल पर आया और वह नाच उठी, उनके तन में प्राण आया और वह जो सूर जिस दिशा से आ रहे थे वहीं दिशा की ओर दौडी, न कोई सुध और न कोई बुध - दौडी दौडी दौडी चली जाय।

जितने सूर के नजदीक आती जाये उतनी तन मन और दिल की गति तेज, जैसे मयूर पंख द्रष्टि में पाया वह उछल पडी और पहूँची परम प्रिये सखी और परम प्रीत के चरणों में।

ओहहहह! आसमान रुक गया, चंद्र रुक गया, धरती रुक गयी, हवा रुक गयी, समय रुक गया, पंखी की उडान रुक गयी, वनस्पति की आहट रुक गयी, फूलों की महक रुक गयी। थंभ गया सारा ब्रह्मांड!

प्रीत की रीत ऐसी रच गयी सब एक दूसरे के हो गये। आत्मा परमात्मा हो गयी।

"Vibrant Pushti"

कैसे बंधन से बंधे

जो भव सागर पार हो जाये

कैसे संकल्प से बंधे

जो विचार संसार कृतज्ञ हो जाय

कैसे तन मन से बंधे

जो संस्कृति खिल खिल जाये

कैसे सांस से बंधे

जो सृष्टि प्रीत रस हो जाये

कैसे रंग से रंगाये

जो रोम रोम साँवरिया हो जाये

कैसे आत्म से बंधे

जो आत्म परमात्मा हो जाये

यही है लग्न की विशुद्धता

जो जन्म जन्म सफल हो जाये

"Vibrant Pushti"

कहीं नदीओं के बूंद छूये

कहीं झरनों के बूंद छूये

कहीं सागर की बूंद छूये

कहीं तालाब के बूंद छूये

कहीं वाव की बूंद छूये

कहीं कुवें की बूंद छूये

कहीं कुंजन की बूंद छूये

कहीं घट की बूंद छूये

कहीं नैनन की बूंद छूये

कहीं बरसात की बूंद छूये

कहीं धर्म की बूंद छूये

कहीं जीवन धारा की बूंद छूये

कहीं औषधि की बूंदे छूये

न छूये तेरे प्रीत की बूंदें

जो मेरे आत्म का सिंचन था

डूब गया ऐसे संसार बूंदों में

बार बार खुद को रखा प्यासा

एक बार छूने दे साँवरे सांस की बूंद

बस यही है तमन्ना अब यह उम्र की।

"Vibrant Pushti"

असर ही होती है मुझे तेरी हर रीत पर,

क्या

मेरी हर रीत पर ही तेरी हर रीत होती है?

तेरी मेरी यही रीत को अपनी सांस का शोला समझु

जिसमें तुम जलो तो मैं जलु और मैं जलु तो तुम जलो

जलने के लिये ही मोम है

जो जल कर हमें कहते है

यारों जलना ही मोहब्बत है

जो रोशन हो जाये

जो कुरबान हो जाये

जो फना हो जाये

उनसे तो प्रीत की सांसे खिलती है

पतंग वो ही साथ साथ जलते है

जो मोम से अंतरंग मोहब्बत करते है

"Vibrant Pushti"
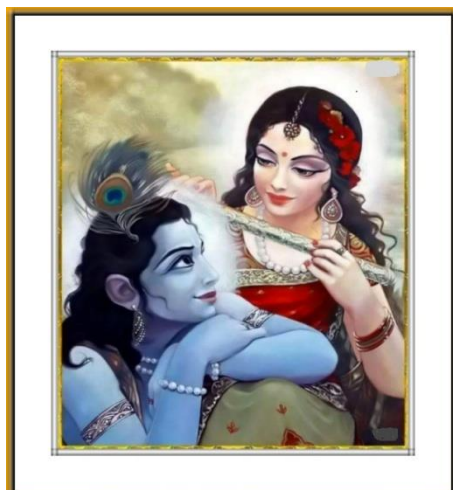
हर धागा जुडता है किसी किसी रीत से

मेरी पतंग से भी जुडा है एक धागा

जिसकी रीत है साथ निभाना

चाहे संसार के कितने ही प्रकार के तरंगे बहे

पर न कभी कटे या तुटे हमारा साथ

यह नैनन में कहीं सूरत खिलती है

ऐेक सूरत ऐसी है

जो दिल की हसरत पर बैठी है

वह तेरी याद है या वह मेरी फरियाद है

"Vibrant Pushti"

नींद में भी न निंदा आये

पलक खुलने से भी न निंदा जागे

अक्षर पढें या पुकारे

जीवन निद्रा में क्यूँ डूबोये

आवत श्याम नयन शयन में

छूवत अधर मधुर प्रीत से

खोवत सुधबुध अंतरंग में

हो गई एक रंग प्रीत संग से

"Vibrant Pushti"

झबक के जागी पलकें

नैनो में जागा साँवरिया

साँसों में उठी प्राणासी

आत्मा में जागी ज्योतियाँ

फडफडते उडे स्वर तूटक

होठों से उठी गूँज हे कनैया!

ज्योतियाँ से रचाया साकार

सामने छा गये साँवरिया

नयनों में दिसे ऐसे

प्राणों में बसे ऐसे

होठों पें रहे ऐसे

मैं तो छम्म छम्म नाचुँ बावरियाँ

हाथ पकड कर वो खेलें प्रीतैयाँ

मैं हो गई सदा की गिरधर की

वह हो गया मेरा प्रियतम चित्त चुरैयाँ

"Vibrant Pushti"

लाल रंग से लालन से खेलुं

लालन लट लट लड्डू उडाके खेलें

हरा रंग से श्री हरि से खेलुं

श्री हरि हरे हरे मृद हास्य खेलें

नीला रंग से नीलांबर खेलुं

नीलांबर नित नित आकाश खेलें

साँवरे रंग से साँवरिया से खेलुं

साँवरिया अंग अंग आंतर खेलें

गुलाबी रंग से गोविंद से खेलुं

गोविंद घुम घुम रास से खेलें

पीला रंग से पुष्टि से खेलुं

पुष्टि तन मन धन सिंचन से खेलें

लूट गई डूब गई रंग गई एक ही रंग में

श्याम सुंदर की प्रीत रंग में

"Vibrant Pushti"
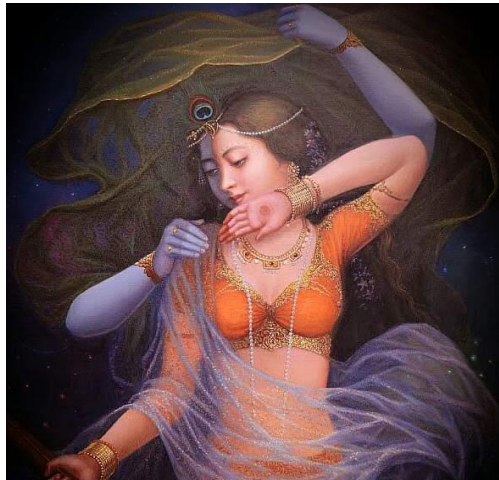
नयन भर गई

होठ सी लिये

कंठ रुक गये

साँस चरण छू गये

नहीं दूर कर सकता हूँ

नहीं दूर रह सकता हूँ

नहीं पलक झबक सकता हूँ

नहीं साँस ले सकता हूँ।

धडकन को कहता हूँ

खुद ही धडकती जा

नयन में बसे मेरे प्रभु से

आत्म ज्योत जोडती जा

निकट से निकट इतना निकट

खुद को खुद में समाती जा

ओहहह! मेरे प्रिये!

"Vibrant Pushti"
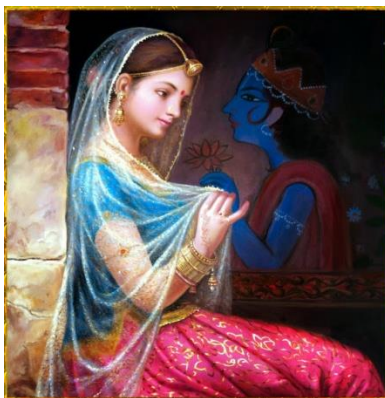
रुठा न करो ऐसे कि हर बार मैं इंतजार करता करता रहूँ

क्या यही है रीत है वफा की जो मैं जन्म जन्म से तडपता रहूँ

तु रज रज बूँद बूँद किरण किरण अपने प्यार की बरसाता रहे

मैं प्यासा बादल की तरह भटकता फिरु तेरी एक झलक के लिये

यही सिलसिला है पल पल साँस का जो जलाये तन मन विरह से

जहां भी पडे नजरे वैरान है जहाँ जहां तु नही हर दिल तडपता वहां

क्या यही है तेरे जीवन जीने का रास्ता जो हर रास्ता भटकता जाय

उपर से तु खेल खेले हर नियम से हमें हराये हमें फसाये हमें नचाये

पर इतना आज जानजा मतवाले!

हम भी तेरे अंश है अंशी!

तेरे ही जाल में तुझे फसायेंगे तुझे पकडेंगे

कोई पल तो आयेगी साँवरे!

जब तु होगा हमारे लिये बावरे! तो न नियम होगा, न रीत केवल होगी हमारी प्रीत

जो बांधेगे ऐसी डोरी से न कभी छूटेगा हमारे आँचल से

ऐसे लिपटेंगे जैसे द्रोपदी का चीर पूरे

ऐसे नचायेंगे जैसे गोपियों का माखन चूरे

ऐसे बांधेंगे जैसे यशोदा से जूठ मूठ रीस कर

ऐसे दौडायेंगे जैसे सुदामा का मित्र बन कर

ऐसे तडपायेंगे जैसे श्री राधे की प्रीत विरह कर

ऐसे भटकायेंगे जैसे वैष्णव का संसार बसा कर

ऐसे पिलायेंगे विष जैसे मिरा ने पीया घूँट घूँट कर

ऐसे तरसायेंगे मिलने को जैसे अष्टसखा कीर्तन कर

तु एक है पर हम अनेक है

अनेकता में एकता ऐसी जुडेंगे की तु तु न रहेगा तु हममें बस जायेगा प्रीत की ज्योत बन कर।

न दूर है अभी, न देर है अभी

थान लिया है हमने तु नही भागेगा कभी

समझले भी एक मौका देते है अभी

फिर कहना न कभी की तु हमारा है अंशी

आजा अभी आजा!

मेरा साँवरा आजा!

मेरे श्याम सुंदर आजा!

मेरे गोविंद आजा!

मेरे गोपाल आजा!

मेरे विठ्ठल आजा!

मेरे वल्लभ आजा!

मेरे कृष्ण कन्हैया आजा!

मेरे मोहन आजा!

मेरे घनश्याम आजा!

मेरे गिरिधर आजा!

मेरे मदन मोहन आजा!

मेरे श्री नाथ आजा!

मेरे बालकृष्ण आजा!

मेरे नवनीत प्रिया आजा!

मेरे मधुसुदन आजा!

मेरे कान्हा आजा!

मेरे गोवर्धन आजा!

मेरे बाँके बिहारी आजा!

मेरे राधे आजा!

"Vibrant Pushti"

नजर झुकाये तो बसे श्याम

नजर उठायी तो दिखे श्याम

नजर तिरछायी तो इशारा करे श्याम

नजर पलटायी तो छीप जाये श्याम

नजर मारी तो घायल हो श्याम

नजर हटायी तो दूर हो श्याम

नजर बिगाडी तो नहीं रहे श्याम

नजर लगायी तो डरते रहे श्याम

नजर बंधायी तो न देखे श्याम

नजर बिछायी तो छुपा छुपी खेलें श्याम

नजर चुरायी तो भागे श्याम

नजर उतारी तो रीस गये श्याम

नजर लंबायी तो दूर दूर दिसे श्याम

"Vibrant Pushti"

सूरज की किरणों ने नैनों को पूछा

मंद मंद महकती हवा ने मन को पूछा

पक्षीओं की कलबल कलबल ने तन को पूछा

आकाश का नीला रंग ने साँस को पूछा

क्यूँ नहीं जागत आज यह पुष्टि सिंचित रे?

ओहहह! पलक खुलत नयन दिसत भोर भयी कब नहीं ज्ञात

ऐसे खेलत मनमोहन अठखेलियाँ

पलक नाचत नयन हसत मुखडा मरक मरक जाय

मन मन झुमत तन तन खिलत रोम रोम आनंद पाय

ओहह! मेरे नटखट श्याम सलौना!

"Vibrant Pushti"

मेरे सपनों से खेलने आता है श्याम

गोकुल खेलत

गोवर्धन खेलत

खेलत छाक लीला श्याम

मेरे सपनों से खेलने आता है श्याम

मेरे ख्यालों से खेलने आता है श्याम

गांव स्वच्छ करे

शहर सुंदर सजाये

गौचारण लीला रचे श्याम

मेरे ख्यालों से खेलने आता है श्याम

मेरे एकांत से खेलने आता है श्याम

सिद्धांत जगाये

द्रष्टांत रचाये

पुष्टि रंग लीला रंगाये श्याम

मेरे एकांत से खेलने आता है श्याम

मेरे विचारों से खेलने आता है श्याम

मन दौडाये

नयन तरसाये

विरह लीला फूल बरसाये श्याम

मेरे विचारों से खेलने आता है श्याम

मेरे सपनों से खेलने आता है श्याम

मेरे ख्यालों से खेलने आता है श्याम

मेरे एकांत से खेलने आता है श्याम

मेरे विचारों से खेलने आता है श्याम

"Vibrant Pushti"

है साँवरि!

साँसों में रहकर तुम

हमारे जीवन बन गए

प्रीत ऐसी जतायी कि

तुम हमारे दिल बन गए

कहीं भी कहाँ भी रह कर

तुम हमारे अंदर बस गए

सृष्टि स्पर्शु जगत निहालु

तुम मेरी जान बन गए

प्रकृति के हर पदार्थ छू लूं

तुम मेरे प्रियतम बन गए

नयन तस्वीर देखते देखते

पलक कब बंध हो गई

न तन मन को समझाई

सोते सोते ऐसे सो गयी

कोई पुकारे कोई छूये

न मोहे खबरियाँ पाई

तस्वीर के रंगो से जागा

पलको की पिछी से रंगा

विरह की बूँदो से भीगा

अंग अंग मोहन लिखाई

चुनरी के पट से बांधा

चुडी के रंगो से खेला

बिंदियाँ की रंगो छेडा

अधर की लाली पीया

मोहे अंग अंग लिपटा

मोही अंगडाईयों में झूमा

मोहन ने मोहनी सजाया

आत्म से आत्म मिलाया

पलक झंझोल कर हवा हो गया

नयन तस्वीर को दर्पण दिखाया

ओहहह! साँवरा! तु क्या कर गया

यह बावरी को साँवरि कर गया

"Vibrant Pushti"

ओहहह! मेरे परम प्रिय!

विरह बेला में अंग अंग तरसे

मन ढूँढे तन ढूँढे ढूँढे नैना भारी

ओ मतवाले! क्यूँ लीला पसारी

तरस बरस कर श्रमबूँद छलके

सामने आया निरख प्रीत पीने

कोई बात नहीं!

आना ....

ऐसे आना.....

आते रहना

अदभुत!

अलौकिक!

सौंदर्य

शृंगार

रस

प्रीत रंग से

"Vibrant Pushti"

थिरक रहे है नैन

धडक रहे है अंग

थिरक रहे है होठ

मटक रहा है मन

थिरक रहा है तन

भटक रहा है चैन

थिरक रहा है स्पर्श

"Vibrant Pushti"

याद मन से करे

याद अक्षरों से करे

याद स्थली स्पर्श से करे

मन मिलने चाहे

याद मिटाने चाहे

आमने सामने चाहे

कबतक रहें दूर दूरी

एक बार मिले

मिले व्रज की गली

खेलें बरसाने में होली

चले गिरिराज निकुंज

बैठे यमुना गहरी निकुंज

कहो कैसे मिले

कहा कैसे मिले

नयन तकत रही

साँस तडप रही

"Vibrant Pushti"

खुलते ही नयन कृष्ण चाहे

मन को समझाये कृष्ण कृष्ण

तन में बसाना है कृष्ण कृष्ण

आत्म को सजाना है कृष्ण कृष्ण

क्यूँकि

यही है पिया मिलन की प्यास

यही है जन्म जन्म की आग

यही है भव भव की आश

यही है विरहिणी का प्रकाश

यही है तत्व से परमतत्व गति

यही है प्राकृत से संस्कृत मति

यही है सृष्टि से सर्जन की रीति

"Vibrant Pushti"
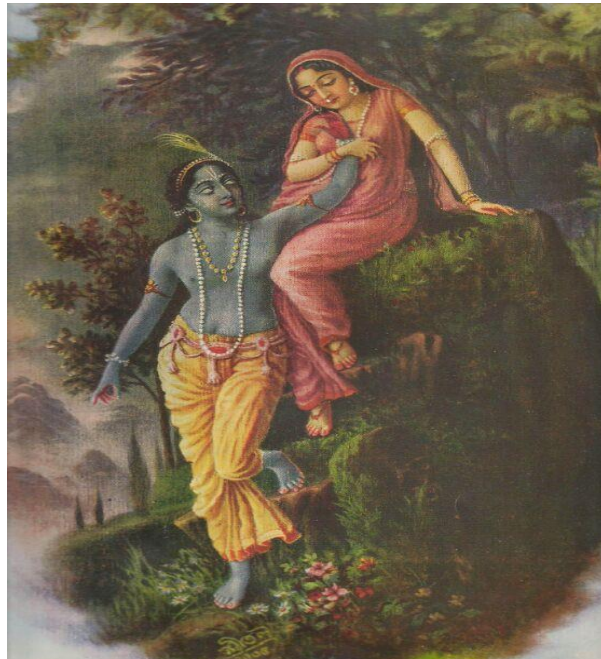
श्याम संग खेले जीवन

श्याम छायी बदरिया घटा

श्याम मेघ बरसे बूँद

श्याम यमुना खलखल बहे

श्याम लहर सागर मिलने

श्याम विशाल आकाश

श्याम रंग बिखरे शाम

श्याम ओढणी पहने रजनी

श्याम श्याम से मिलने श्यामा

श्याम राह पर दौडे सहेली

श्याम विरह बहे श्याम अश्रु

श्याम पुकारे श्यामा प्रीत सूर

श्याम काजल भरे नैन तरसे

श्याम नजर से श्यामा निरखें

श्याम श्यामा एक ही झंखे

श्याम आत्म से श्यामा जुडे

श्यामा श्याम एक मन एक प्राण

श्यामा श्याम प्रीत रचाये

श्याम श्यामा रास जताये

श्याम बिन श्यामा अधूरी

श्यामा बिन श्याम अधूरै

श्याम श्यामा एक ही है

श्यामा श्याम परम अमृत

"Vibrant Pushti"

हे साँवरे!

तु ही मेरा जीवन खेवैया

तु ही मेरा जीवन रखवैया

तु ही मुझे शिखा जा कैसे खेले जीवन खेलैया

हाथ पकडले बंसी बजैया

तो मैं हो जाऊँ ब्रिज बाला

साँवरिया हो जा मेरा कनैया

पिया पिया रटे सदा मेरी नैया

"Vibrant Pushti"

करते है इंतजार तेरी पलकों पर बैठने

करते है इंतजार तेरे नैनों में बसने

करते है इंतजार तेरे अधर रस चूसने

करते है इंतजार तेरे तन से तन मिलाने

करते है इंतजार तेरे रंग से रंग भिगोने

करते है इंतजार तेरे आँचल में छूपने

करते है इंतजार तेरे संग संग खेलने

करते है इंतजार तेरे बंसरी की धून पर नाचने

करते है इंतजार तेरे बांकी अदा निहारने

करते है इंतजार तेरे चरणों की धूल में बिखरने

"Vibrant Pushti"

आकाश में घुमता आधे चांद ने कहा

आधी रात में आधी चांदनी में आधे नयन खोले तु क्या करता है?

आधे मन जागे आधे तन जागे आधे हिलते अधर ने कहा

हे चांद! जैसे तु अकेला ढूँढता है कुछ बस यही कुछ मैं ढूँढने जागा

पिया जागे दूर कहीं पिया की विरह जगाये

आधी प्रीत की बात कहने तेरी चांदनी से कहाये

तडपते विरह में यह चांद देख लेना

चांदनी को अपने दिल की बात कह देना

मेरा संदेश वह पहूँचायेगी जैसे तेरा संदेश मुझे

प्रीत करते करते कभी न छूटेंगे आधी साँस से

हे साँवरि! सदा खिलना मेरे प्यार से

सदा मुस्कुराना मेरी याद से

न रहे कोई रीत आधी न रहे कभी प्रीत आधी

"Vibrant Pushti"
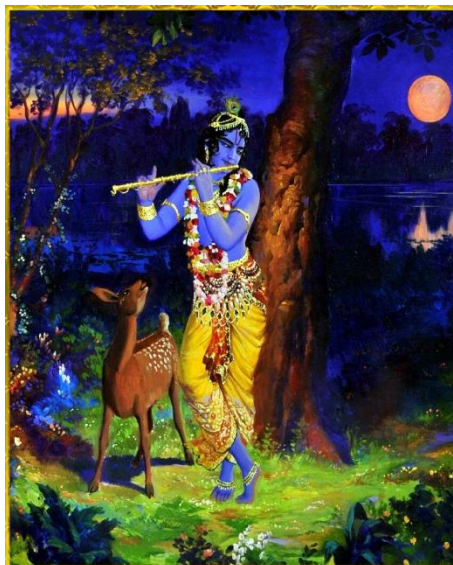
कितना अलौकिक मन रचने का संकल्प
कितना अदभुत तन रचने का संकल्प
कितना मधुर आत्मा रचने का संकल्प
कितना सुंदर आशियाना रचने का संकल्प
कितना सौंदर्य भरा जगत रचने का संकल्प
"कृष्णाश्रय" मन
मन! ओहहह! सदा दौडता, नाचता, कुदता, मचलता, लहराता, खिलता, हसता, गाता, खेलता, झुमता

मन का संकल्प!

कृष्ण मेरे मन में पधारे!
कृष्ण मेरे हर तरंग से खेले!
कृष्ण मेरे हर संग से हसे!
कृष्ण मेरे हर लहर से झुमे!
कृष्ण मेरे हर गीत से गाये!
कृष्ण मेरे हर रीत से नाचे!
कृष्ण मेरै हर विचार से कुदे!
कृष्ण मेरे हर स्पर्श से खिले!
कृष्ण मेरे हर रंग से लहरे!
कृष्ण मेरी हर अदा मैं मचले!
मन से वरण करु श्री कृष्ण से
जहाँ बसे मेरे प्रीयवर "कृष्णाश्रय" हो जाय।
"Vibrant Pushti"

है कुछ यह लहराती हवा में

है कुछ यह उडती धरती रज में

है कुछ यह यादों की तरंग में

है कुछ यह प्रीत की धडकन में

कुछ तो है जो दूर हो

तो भी मेरे साथ हो

कुछ तो है जो तुम जहां भी हो

पर मेरी याद में हो

है साँवरि!

"Vibrant Pushti"

कृष्ण गूँज सुनता हूँ

रोम रोम तरसते है

कृष्ण सूर छेडता हूँ

रोम रोम बरसते है

कृष्ण अक्षर पढता हूँ

नैन सूर्य उगाता है

कृष्ण अक्षर लिखता हूँ

नैन सागर बहाता है

कृष्ण कहीं भी नहीं है

साँस तुट छूट करती है

कृष्ण कहीं भी है

साँस कृष्ण की भरता हूँ

"Vibrant Pushti"

चारों ओर दिवार है

उसमें हमारी यादें है

जागती जागती हर याद

कुछ कहती रहती है

याद से फूल खिले तो हम माली है

याद से तीर चले तो हम राजा है

याद से धान्य उगे तो हम किसान है

याद से सूर जागे तो हम कवि है

याद संगीत उठे तो हम वादक है

याद से नैन बरसे तो हम योगी है

याद से स्वर सुने तो हम पति है

याद से याद बढे तो हम अकेले है

याद से साँस महके तो हम भक्त है

याद से नफरत निकले तो हम बेवफा है

याद से विरह तडपे तो हम प्रेमी है

याद से कुछ न हो तो हम पता नहीं क्या है?

"Vibrant Pushti"
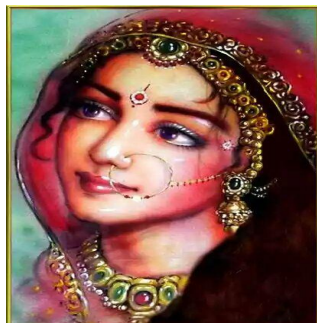
नहीं कुछ कह सकता

नहीं दूर रह सकता

तेरी यादों में खो सकता

तेरे ख्यालों में खो सकता

तेरी मधुरी कल्पना में खो सकता

तेरी अधूरी बातों में खो सकता

तु ऐसी तेरी मूरत ऐसी

तु बसी तेरी सूरत ऐसी

तु हंसी तेरी चाहत ऐसी

तु ठसी तेरी आदत ऐसी

"राधा" धारी तेरी रीति ऐसी

"कान्हा" प्यारी तेरी प्रीत ऐसी

"Vibrant Pushti"

धरती की गोद में खेले तो व्रज रज हो जाय

नदी की गहराई में छूपे तो यमुना जल हो जाय

परबत की गुफा में प्रकटे तो गोवर्धन हो जाय

घर घर दूग्ध दधी मटुकी फोडे तो गोकुल हो जाय

गली गली गौमृत बहाये तो गोमती हो जाय

वन वन प्रीत लीला रचाये तो वृंदावन हो जाय

जन जन आनंद उभराये तो नंदगांव हो जाय

तन मन सुध बिसराये तो गोपगोपि हो जाय

मधुरी सी बंसी की तान छेडे तो रासलीला हो जाय

गोपगोपि चित्त हरण कराये तो चितचोर हो जाय

प्रीत विरह की प्यास जगाये तो

मेरा साँवरिया हो जाय

"Vibrant Pushti"

जागत नैन कुछ कहत

पलक पलक इशारा करत

नजर नजर इधर उधर फिरत

खील खील अति तीव्र हसत

मन नचाया मन मधुर भरा

तन नचाया तन स्पंदन भरा

चारों ओर साँवरिया दर्श पाया

अति मोहक अदा निराली

अंग अंग प्रीत रंग बरसाया

भोर भई यह रंग लेकर

शाम भयेगी मिलन ऋतु होकर

ओ मेरे साँवरिया!

"Vibrant Pushti"

कसूर तो यह कानों का है

जो तेरा नाम एक बार सुन लेता हूँ तो यह नैना केवल तुम्हें ही ढूँढते फिरती रहती है

कसूर तो यह नैनों का है जो एक बार तेरी तस्वीर भी कहीं नजर आ बसी तो केवल तुम्हें ही तरसती रहती है

कसूर है यह मन का जो एक बार कैसे भी तुम्हें सोच लिया तो स्थिर हो कर केवल तेरे स्मरण में ही घुमता रहता है

कसूर है यह दिल का जो एक बार तेरी प्रीत लीला पहचानी तो तेरे ही विरह में पागल प्रेमी हो कर तुम्हें पुकारता रहता है

मेरा प्यार!

"Vibrant Pushti"
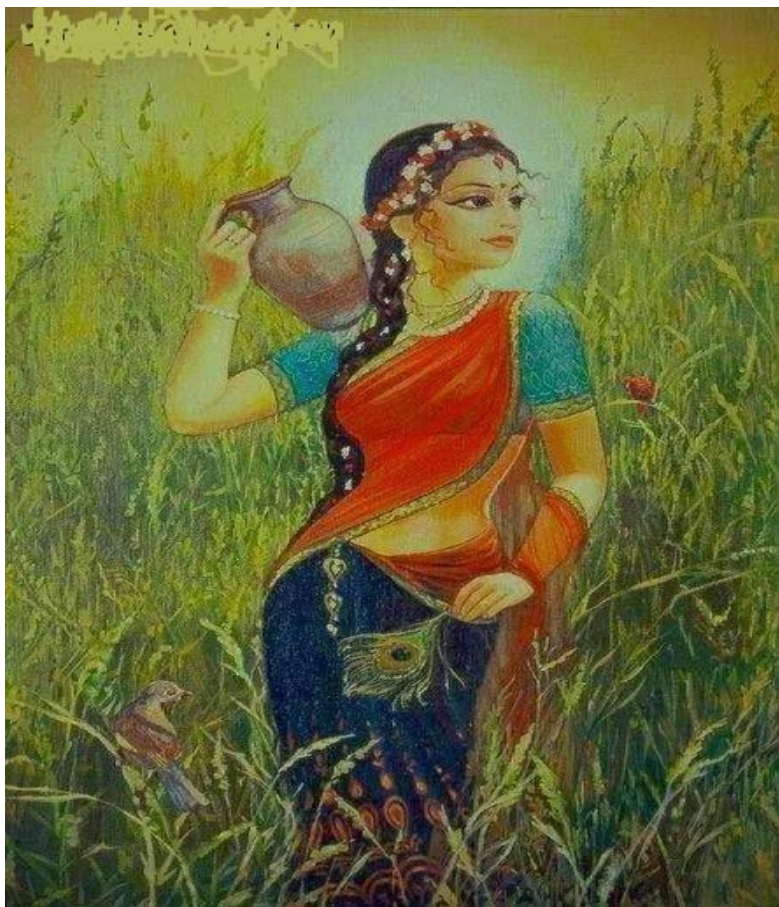
"विरह"

है कुछ ऐसी अनुभूति जो तरस तरस कर प्यास बुझाते है

है कुछ ऐसी रीत जो आश बांध कर निराशा तोडती रही

है कुछ ऐसी महक जो फूल खिलते खिलते भंवर फूल रुप परिवर्तित हो गया

है कुछ ऐसी अगन जो ज्योत तन मन और आत्म को ज्योत में प्रकटा दिया

है कुछ ऐसी तरंग जो कहीं भी हो कैसे भी हो आत्म के आँचल को थरथरा दिया

है कुछ ऐसा रंग जो चडा तीत हो एक ही रंग अंग अंग छा गया

है कुछ ऐसी श्वास जो प्राण ने हर उच्छ्वास को धडकन कर लिया

"Vibrant Pushti"

धूप से धरती धण धण जले

धण धण अगन वायु बहे

जलते अगन में मन मेरा जले

आतुर मिलन की आग में जले

तरुवर उडे खुद संभलने

पानखर खेले रज रज मिलने

रज रज उडे रोम रोम तरसाने

अंग अंग तडपे विरह मिटाने

मन दौडे दूर दूर तक

ढूँढने मृगजळ प्यास बुझाने

नैन दौडे दूर दूर तक

झलक पाने एक बूँद जल

कैसी है यह बैचेन घडीयाँ

विरह अगन में आग बरसाये

प्रीत जले प्रियतम जले

जले पिया की यादें

"Vibrant Pushti"

अष्टसखा अष्ट शमा दर्शन पाये

आठों याम श्री प्रभु स्मरण पाये

निकट निकट श्री प्रभु संग राचे

भव सागर बूँद भक्ति सांचे

बूँद बूँद सिंचे विरह अग्न तन

तडप तडप तरसे व्याकुल मन

प्रीत की रीत जगायी श्याम ने

क्षण क्षण ढूँढे आत्मा नयन

आजा साँवरिया!

आजा साँवरिया!

हे गिरधारी!

अब न रहे मेरी साँस अटूली।

"Vibrant Pushti"
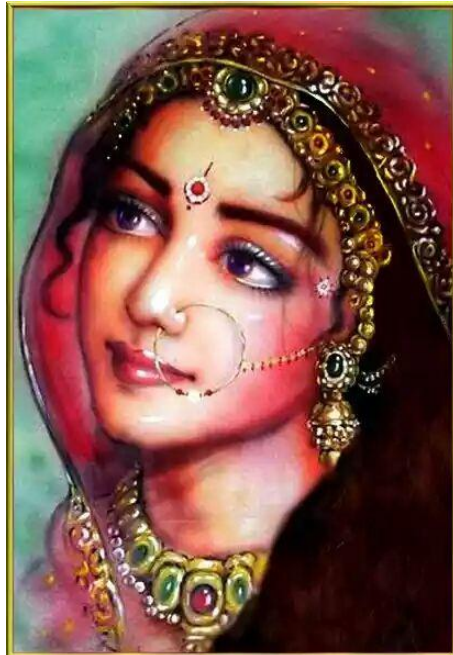
जागी उष्मा धरती से

आकाश ने थाम लिया

स्पर्श दिया शीतल आँचल

छा गये बनके बादल

धरती की हर रीत तरसे

पुकारे मन की प्यास

बार आकाश निहाले

करे नयन से बात

धरती की अवदशा तक कर

उष्मा को बादल में बदला

चाँद शीतल धारा में डूबोया

बूँद बूँद से धरती भिगोया

प्रीत रीत का अमृत पिलाया

ऐसा है ये प्यार!

जो धरती आकाश का एकरार

"Vibrant Pushti"

जो मुझे हर बार मनाये वह मुझसे रुठे?

आज कान्हा राधा से रुठ गया।

राधा सोचने लगी यह कैसी रीत हुई जो कान्हा मुझसे रुठा!

ओहहहह!

न बासुरी की पुकार सुनी

न प्यार भरी टहल सुनी

न इंतजार की वेदना सुनी

न कोई सखा सखी का संदेश सुना

न कोई गैया की भांभर सुनी

न कोई मेरा नाम की आहट सुनी

न तरुवर की किलकिलाट सुनी

न पौधों की हलचल सुनी

"Vibrant Pushti"

करते है इंतजार

मुस्कुराते है बार बार

सुनते है सबकुछ

कहते है कछ कुछ

वादा करते है आमने सामने

करेंगे ऐसा कुछ

हो जाये अनेक से एक

यही है मिलने का हमारा

यही है थाडे रहेना हर पल

यही है दौड के आना नाथद्वारा

यही है हम दोनों की पुष्टि प्रीतिता

मेरा प्रियतम श्री नाथजी!

आया हूँ तेरे द्वार

सदा पुष्टि रंग पिलाना

साँस के साँस से बसना

नैन से नैन का मिलाना

तन मन धन आत्म जुडना

"Vibrant Pushti"

नयन खुले मेरे नींद से

मैं वारी जाऊँ श्याम पर

पलक बँध मुखार विंद पर

मैं हारी जाऊँ घुंघराले केश पर

चीपक गुलाबी अधर पर

मैं सवारी जाऊँ अमृत चंदन पर

मधुर मुस्कान मुखडा पर

मैं लूट जाऊँ साँसें भर भर कर

कैसी रीति सजायी नटखट ने

मैं भीग जाऊँ प्रियतम जोगन बन कर

"Vibrant Pushti"

ऐसे नहीं मिलते कृष्ण

वैसे नहीं मिलते कृष्ण

कृष्ण नहीं है ऐसे वैसे

जो मिले ऐसे जैसे

जो मिले जैसे वैसे

वो तो मिले ऐसे उन से

जो मिले उनके मन से

मन से मन को जोड़ दो उन से

अपने दिल को जोड़ दो उन से

ऐसी निराली प्रीत उनकी

हर घड़ी उन्हें मिलने को तरसे

"Vibrant Pushti"
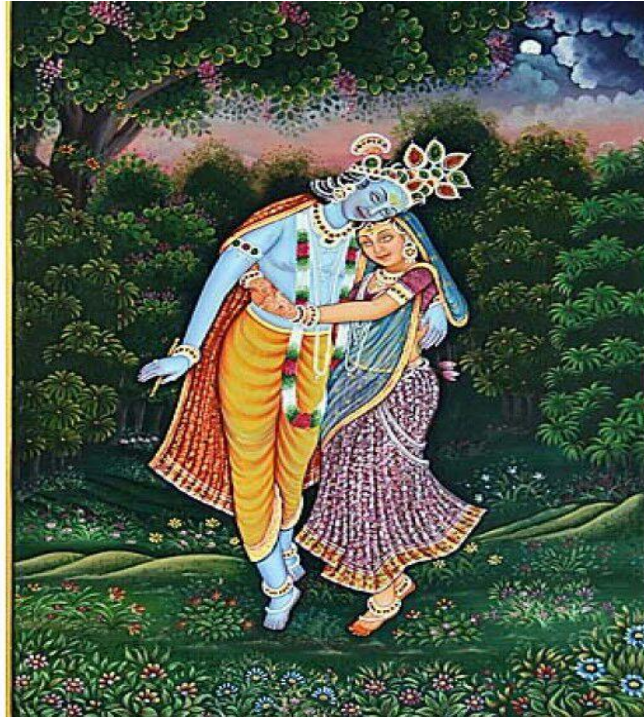
हे कृष्णा!

नाम की एक रट ही काफी है भव सागर संसार पार करने को

हे कृष्णा!

स्मरण की एक छडी ही काफी है जीवन शरण में करने को

हे कृष्णा!

दर्शन की एक झांखी ही काफी है नैन से तन में बसाने को

हे कृष्णा!

होंठों से एक पुकार ही काफी है तुम्हें मेरे पास लाने को

हे कृष्णा!

नजर का एक इशारा ही काफी है मन से मन जुड़ने को

हे कृष्णा!

पाँव का एक डग ही काफी है तेरे चरण स्पर्श पाने को

हे कृष्णा!

एक अदा ही काफी है तेरी प्रीत की रीत समझने को

हे कृष्णा!

साँस की एक लडी ही काफी है तुझसे अंग से अंग मिलाने को

"Vibrant Pushti"

निहारत निहारत श्याम को नैना गये खोय

श्याम श्याम सुनते सुनते कर्ण डूब गया

जपत जपत श्याम श्याम अधर लूट गये

श्याम श्याम लिखत मनवा चोर गये

ऐसा है श्यामा!

श्याम श्याम करते हम श्याम हो गये

जित देखूँ तित श्याममयी है

श्याम कुंज वन जमुना श्यामा

श्याम गगनघन घटा छाई है

श्याम धरती श्याम शीत सागर

श्याम अक्षर अनिल बह श्याम

श्याम स्मृति श्याम कृत श्रुती

श्याम श्याम ही श्याम हर क्षण

श्याम श्याम ही श्याम हर कण

रज रज श्याम गुण ही उगाये

बूँद बूँद श्याम तृप्त ही बरसाये

श्याम श्याम ही प्रीत श्याम श्याम

"Vibrant Pushti"

जितनी नाचे नयन अदा

इतने नटखट तेरी अदा

नयन मिचाऊँ तो स्मरण में आय

नयन खोलाऊँ तो समक्ष में धाय

नयन जगाऊँ तो यादों में आय

नयन अपलकाऊँ तो सामने प्रकटाय

नयन फिराऊँ तो जीवन घूमाता जाय

नयन सजाऊँ तो मुख शृंगार सोहाय

नयन रुलाऊँ तो आँसू में डूबता जाय

नयन तीरछाऊँ तो घायल प्रीत मराय

नयन मिलाएँ तो प्रीतामृत दिल पीलाय

कैसी है तेरी हर नटखट अदा

जित जित करुँ,

हे मेरा प्यार राधा ! मैं कृष्ण हो जाय ।

"Vibrant Pushti"

जागते रहते थे सदा यह नैना

कहीं से आये कान्हाँ

नैन मूंद मूंदाये

इतनी ठंडक मिली तन को

इतनी शीतलता मिली मन को

ठरठरा लगे तन मन

झूमने लगा दिल चमन

खेलते रहो सदा मेरे मोहन

पल पल इंतजार करु प्रियतम

"Vibrant Pushti"

कोई वादा न करे कोई खाये न कसम

हर घड़ी साथ रहे न कभी बिछडे न हम

ऐसी करे प्रीत कान्हा से

ऐसी जगाये रीत कान्हा से

तो मेरा मन यमुना हो

तो मेरा तन गिरिराज हो

तो मेरी साँसें व्रज रज हो

तो मेरा दिल वृंदावन हो

बसे मेरे आत्म साँवरिया

मैं सदा रहुँ श्याम बावरीयाँ

"Vibrant Pushti"
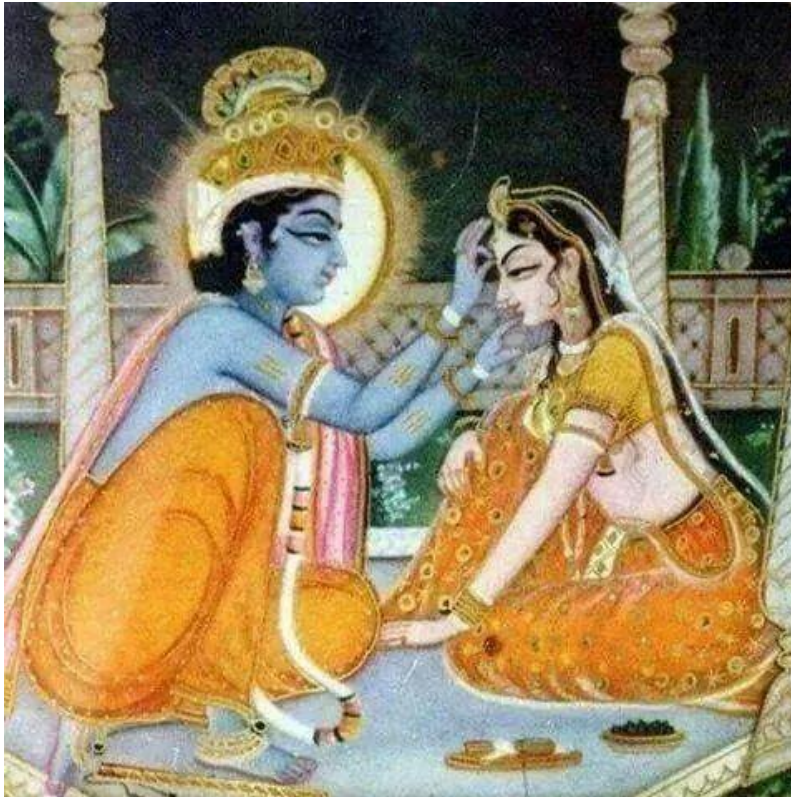
मिलते है यादों से

मिलते है बंध पलक से

मिलते है तडपते अधर से

मिलते है खींचती साँस से

मिलते है धड़कन पुकार से

मिलते है स्वर की आहट से

मिलते है अश्रु की भीगाई से

"Vibrant Pushti"

मेरे रॉम रॉम में बसने वाले श्याम

हे गिरिधर ! हे गोपाल ! हे गोविंद ! हे मोहन ! हे नयन कमल ! हे मदन गोपाल ! हे शामलिया !

कैसे है यह कहने वाले

काजल लगाये तो कृष्ण

कानों में बाली लगाये तो कृष्ण

शीर पर मुकुट पहनें तो कृष्ण

होंठों से गुनगुनाये तो कृष्ण

तीरछी नजर से देखे तो कृष्ण

हाथों में कडा पहनें तो कृष्ण

तन पर पीतांबर सजाये तो कृष्ण

पैरों में पायल बांधे तो कृष्ण

ता थैया थैया थैया नाचें तो कृष्ण

मुख पर मुस्कान लहराये तो कृष्ण

जुल्फों को घुघंराले सजाये तो कृष्ण

गले में माला पहने तो कृष्ण

नैनों की पलक न झुकाये तो कृष्ण

हर अदा में कृष्ण

हर भाव में कृष्ण

हर शृंगार में कृष्ण

हर रंग में कृष्ण

हर तरंग में कृष्ण

हर अंग में कृष्ण

हर संग में कृष्ण

हर सुंदरता में कृष्ण

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - राधा

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "